P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महामना पं0 मदनमोहन मालवीय के शिक्षा पर आध्यात्मिक विचार एवं उपयोगिता

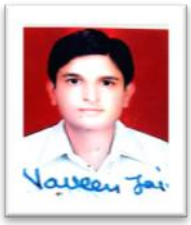

नवीन जैन
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय,
महेन्द्रगढ, हरियाणा, भारत

सारिका शर्मा
विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय,
महेन्द्रगढ, हरियाणा, भारत

सारांश

अंग्रेजीवेत्ता संस्कृत विद्वान् महामना पंडित मदनमोहन मालवीय आध्यात्मिक महापुरूष थे। इनके विशाल व्यक्तित्व में सभी धर्मों एवं शिक्षा का समन्वय पाया जाता है। महामना मालवीय सभी का शिक्षा के माध्यम से आध्यात्मिक विकास करना चाहते थे। शिक्षा में आध्यात्मिक विकास के लिए ही महामना मालवीय ने ब्रिटिश शासन में 4 फरवरी 1916 को बनारस में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। जिसमें श्रुतियों तथा स्मृतियों द्वारा प्रतिपादित वर्णाश्रम धर्म के पोशक सनातन धर्म के सिद्धांतों पर अधारित शिक्षा, संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन की अभिवृद्धि तथा भारतीय भाषाओं और संस्कृत द्वारा वैज्ञानिक तथा शिल्पकला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार में योगदान दे सकें। इसलिए महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सबसे पहले वैदिक विद्यालय की स्थापना की, जहां वेद, वेदांग, स्मृति, इतिहास तथा पुराणों की शिक्षा दी जा सकें। ज्योतिष विभाग में ज्योतिष तथा अन्तरिक्ष विद्या सम्बन्धी वेधशाला भी निर्मित करवाई। वर्तमान में हमारे नैतिक चरित्र में गिरावट आई है। यदि महापुरूषों के आध्यात्मिक जीवन, विचारधारा, शिक्षा, कार्य को पढ़ा, लिखा एवं अध्ययन किया जाये तो वह प्रत्येक छात्रों के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्यिक रूप से सदृढ़ बना सकती है। आध्यात्मिक विकास पर बल देते हुए महामना मालवीय ने कहा था कि ''सुयोग्य एवं शिक्षित धर्म–गुरूओं के अभाव के कारण अधिकांश हिन्दू–जनता, राजा, धनीमानी नागरिक, यहाँ तक की ब्राह्मण भी धर्म की नियमानुकूल शिक्षा तथा उस पर आचरण करना नहीं सीख पाते''। उपरोक्त शोधपत्र मैंरे पी0एच0डी0 शोध विषय *महामना पंड़ित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक चिंतन का एक समीक्षात्मक अध्ययन* से संबधित है।

मुख्य शब्द : महामना मालवीय, शिक्षा, आध्यात्मिक, उपयोगिता।

प्रस्तावना

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय आध्यात्मिकता की जीवन्त मूर्ति थे। उनके रोम–रोम में आध्यातिक्ता का वास था और पद पद पर धार्मिक आचार की निष्ठा अभिव्यक्त होती थी। शिक्षा को प्रत्येक स्तर पर महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने आध्यात्मिक शास्त्रचिन्तम के द्वारा प्रतिष्ठित एवं परिष्कृत बनाया था। जिस कार्य को ये अपने हाथों में लेते थे उसे आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा सफलता की कोटि तक पहुँचा कर ही छोड़ते थे। इसका सबसे बड़ा प्रमाण था हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के आध्यात्मिक जीवन का शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट तथा सबसे महत्त्पूर्ण कार्य था। इस विश्वविद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में जो अलौकिक, आध्यात्मिक कार्य किया है वह सर्वविदित है।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय आध्यात्मिक महापुरूष थे। इसी वजह से उनकी जिह्वा पर सरस्वती का निवास था। इनकी वाणी में जादू था। जिससे ये श्रोताओं के मन को मोह लेते थे। इसमें सन्देह नहीं कि महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने अपने जीवन में जो सफलता प्राप्त कर शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किया, उसमें उनकी आध्यात्मिक शक्ति प्रचुर योगदान था।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय की आध्यात्मिक एवं दर्शनिक विचारधारा का प्रमुख स्त्रोत श्रीमद्भागवत था। महामना मालवीय श्रीमद्भगवत भागवत के विद्वान् तथा सरस व्याख्यता थे। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय अपने जीवन के व्यवहारों में भी पूर्ण आस्तिक थे। ईश्वर पर असीम श्रद्धा रखते थे और भारतीय सांस्कृति एवं परम्परा का सदैव पालन एवं निर्वाह करते थे। सन् 1931 में महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जब महात्मा गांधी जी के साथ दूसरी गोलमेज सम्मेलन में लंदन गए थे तो अपनी सारी दिनचर्या की वस्तुओं

को अपने साथ ले गए थे। जिसमें पूजा सामग्री तथा आहार प्रमुख रूप से था। जिससे किसी भी प्रकार का कोई दोष ना लगे। यही महामना पंडित मदनमोहन मालवीय की आध्यात्मिकता थी।

साहित्यावलोकन

मुकुट बिहारी लाल, मदन मोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व, (1978), में महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के धर्म से सम्बन्धित समाजिक विषयों एवं शास्त्रों के आदेशों का पालन करने का वर्णन किया है। राजनीतिक और आर्थिक विषयों में उनके विचार उदार विचारों का वर्णन करते हुए लिखा है कि उदार लोकतन्त्र के बुनियादी सिद्धान्तों पर आधारित थे।

आचार्य पण्डित बलदेव उपाध्याय ने काशी की पाण्डित्य परम्परा, (1983), में महामना पंडित मदनमोहन मालवीय को संस्कृत विद्वान् मानते हुए वंश तथा जन्म, पितृभक्ति, गुरूभक्ति, अध्यापन, नैष्ठिक उपासक, दिनचर्या और महामना के साहित्यिक संस्मरण का वर्णन किया है, जो कहीं न कहीं महामना पंडित मदनमोहन मालवीय को आध्यात्मिक श्रद्धा से जोड़ता है।

वरिष्ठ पत्रकार डाक्टर राम मोहन पाठक, साहित्यिक पत्रकारिता, (1989), में महामना पंडित मदनमोहन मालवीय की पत्रकारिता एवं उनके आध्यात्मिक लेखक के बारे में लिखा हैं। साथ–साथ हिन्दी साहित्य का विकास, आधुनिक हिन्दी पत्रकारिता व काशी, महामना पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा शुरू किए गए दो समाचार पत्र 'अभ्युदय' एवं 'लीडर' में छपे महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के लेखों का वर्णन किया है।

गिरधारीलाल मालवीय, पंडित मदनमोहन मालवीय जीवन एवं कृतित्व एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, (2015) में मालवीय का सम्पूर्ण जीवन जिसमें अध्यापक, पत्रकारिता, वकालत, स्वतंत्रता सेनानी तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के स्थापक के रूप में विर्णन किया है। और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में महामना पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा बनवाया गया काशी विश्वनाथ मंदिर का आलौकिक वर्णन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उदार विचारो का विकास।
2. छात्रों में धैर्य एवं सदाचार की भावना का विकास।
3. सार्वजनीन प्रेम तथा मानवहित के प्रति निस्वार्थ निष्ठा का विकास।
4. वाणी को प्रभाव युक्त बनना।
5. गुरूभक्ति एवं पितृभक्ति के आदर्श को प्रतिष्ठित करना।
6. छात्रों में आध्यात्मिकता का विकास करना।

शोध पत्र का महत्व

पंडित मदनमोहन मालवीय का आध्यात्मिक जीवन का हम सभी के लिए विशेष महत्व है। उनके जीवन और कार्यों से हम सभी आध्यात्मिकता का विकास कर सकते है। तब हमें जीवन के प्रत्येक स्तर की सफलता से कोई नहीं रोक सकता। आस्तिक्य, कर्तव्यनिष्टा, उत्साह एवं आत्मविश्वास सम्बंधी चतुसूत्री पंडित मदनमोहन मालवीय के मंत्र को जीवन में अपनाने से ही आध्यात्मिक का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। पंडित मदनमोहन मालवीय हमेशा कहा करते थे कि ''अपने विश्वास में दृढ़ता, दूसरे की निन्दा का त्याग, मतभेद में सहन–शीलता और प्राणीमात्र से मित्रता रखनी चाहिए।''

निष्कर्ष

एक उन्नत समाज और शक्तिशाली देश के निर्माण का आधार आध्यात्मिकता ही है। देश के विद्वानों ने आध्यात्मिकता के बल पर ही देश की जनता को जागरूक कर एक मंच पर लाते हुए देश को स्वतंत्र करवाया। उन्हीं विद्वानों में मुख्य रूप से पंडित मदनमोहन मालवीयजी के आध्यात्मिक विचार थे। जो आज वर्तमान में भी उपयोगी है। अतः आदर्श गुणा, निर्मल हृदय, विषुद्ध सात्त्विक आचरण, व्यवहार में निपुणता आदि आध्यात्मिक शक्ति की ही देन है। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ऐसे ही एक आलोकसामान्य प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे जिनकी प्रतिभा भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र को आलोकित करती थी, जिनका स्पर्श सामान्य मनुष्य को भी सुवर्ण बना देता था और जिनकी पीयूष वाणी श्रोताओं के कर्णकुहरों में प्रवेश कर हृदय को आप्यायित, आवर्जित तथा अभ्युदित कर देती थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आचार्य पण्डित बलदेव उपाध्याय, 'काशी की पांडित्य–परम्परा', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1983

वी.ए. सुन्दरम्, 'होमेज टू मालवीय जी', बनारस, 1949

श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा, 'मेरे गुरूजन', भीष्म एण्ड ब्रादर्स, कानपुर, प्रथम संस्करण 1945

सीताराम चतुर्वेदी, 'आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय', प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,1980.

समीर कुमार पाठक, 'मदनमोहन मालवीय नवजागरण का लोकवृत्त', नई किताब, नई दिल्ली, 2016.

लक्ष्मीशंकर व्यास, 'महामना मालवीय और हिन्दी पत्रकारिता', काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1987.

अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार, 'मालवीय जी', प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1971.

गिरधारीलाल मालवीय, पंडित मदनमोहन मालवीय जी का जीवन एवं कृतित्व, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन, बनारस, 1915.

Dr. S.K. Maini, Dr. Vishwanath Pandey, K. Chandramouli 'Visionary of Modern India Madan Mohan Malaviya' Showcase, Roli Books. 2018